25

''परमेश्वर का शोक समाचार''

(6:1-4)

हम अध्ययन के एक नये क्षेत्र का आरम्भ कर रहे हैं। ''दण्ड'' का अध्ययन करने पर हमने देखा कि सबने पाप किया है और सब को परमेश्वर की धार्मिकता की आवश्यकता है। अगले भाग में जिसे हमने ''धर्मी ठहराया जाना'' नाम दिया है, पौलुस ने लोगों के धर्मी ठहराए जाने के लिए परमेश्वर के प्रबन्ध के बारे में बताया है। हम ''पवित्र किया जाना'' के भाग में आगे बढ़ने को तैयार हैं।

बेशक पौलुस के सामने रोमियों की पुस्तक लिखवाते समय कोई रूपरेखा नहीं थी। पत्र में कोई अप्रत्याशित विभाजन नहीं है। वह कई बार नया विचार आरम्भ करने से पहले पिछली चर्चा में वापस जाते हुए एक से दूसरे विचार की ओर आगे बढ़ा। इस कारण हमें लगता है कि विभाजन एक-दूसरे से मिलते-जुलते हैं। तौ भी पत्र के विभिन्न भागों में पौलुस के ज़ोर देने को देखने का महत्व है।

नये विषय पर नोट्स

अध्याय 6 और 7 को हमने ''पवित्र किया जाना'' पर पौलुस की शिक्षा के रूप में तैयार किया है। NASB में इसके लिए ''santification'' शब्द दो बार आया है।

> ... जैसे तुम ने अपने अंगों को कुकर्म के लिए अशुद्धता और कुकर्म के दास करके सौंपा था, वैसे ही अब अपने अंगों को *पवित्रता के लिए* धर्म के दास करके सौंप दो (6:19)।
>
> क्योंकि उनका अन्त तो मृत्यु है परन्तु अब पाप से स्वतन्त्र होकर और परमेश्वर के दास बनकर तुम को फल मिला जिस से *पवित्रता* प्राप्त होती है, और उसका अन्त अनन्त जीवन है (6:22)।

''पवित्रता'' आम इस्तेमाल का शब्द नहीं है। बहुत साल पहले क्लेबर्न, टैक्सस में, सैंट्रल चर्च ऑफ़ क्राइस्ट में ग्लैन वालेस वचन सुना रहे थे। अपनी आरम्भिक टिप्पणियों में उन्होंने कहा, ''आज मैं पवित्रता पर वचन सुनाने वाला हूं।'' हर कोई जो पवित्र किया हुआ है, कृपया खड़ा हो जाए। वहां 400 से अधिक लोग थे, परन्तु केवल एक ऐल्डर और एक प्रचारक ही खड़े हुए।[1] स्पष्टतया बहुतों को यह यकीन नहीं था कि वे पवित्र किए गए हैं या नहीं।

''पवित्रता'' *hagios* से निकले *hagiasmos* शब्द का अनुवाद है।[2] इस शब्द का अनुवाद ''पवित्र किया हुआ'' या ''पवित्र'' किया जा सकता है। 6:19, 22 में कई अनुवादों में ''पवित्रता'' है (देखें KJV; NIV)।

मूर्तिपूजक धर्मों में *hagios* का इस्तेमाल उसके लिए किया जाता था जिसे ''देवताओं'' को अर्पित किया गया हो। इसका सामान्य अर्थ ''पृथक किया हुआ या अलग रखा गया'' हो गया।

मसीही लोगों पर लागू करने पर, इसका अर्थ परमेश्वर द्वारा अपने पवित्र उद्देश्यों के लिए ''अलग किया जाना'' है। इस कारण रोमियों 6:19, 22 में, CJB का अनुवाद ''पवित्र किए जाकर, परमेश्वर के लिए अलग किए गए'' है।

नये नियम में ''पवित्र किया जाना'' (*hagiasmos*) का इस्तेमाल मुख्य रूप में दो प्रकार हुआ है। पहले यह हमें संसार से अलग करके परमेश्वर की संतान बनाने के अर्थ में है (देखें कुलुस्सियों 1:13, 14)। इसका अर्थ यह हुआ कि हर कोई जिसका उद्धार हुआ है ''पवित्र किया हुआ'' है। यानी हर कोई ''पवित्र जन'' है (देखें रोमियों 1:7; 1 कुरिन्थियों 1:2)। जब भाई वालेस ने पवित्र किए हुए लोगों को खड़ा होने के लिए कहा, तो उपस्थित हर मसीही को पता होना चाहिए था कि उसे खड़े होने का अधिकार है।

परन्तु ''पवित्र किए जाना'' शब्द का इस्तेमाल नये नियम में एक और अर्थ में भी हुआ है। इसका अर्थ मन परिवर्तन के समय किए जाने वाले *ईश्वरीय ढंग* के लिए ही नहीं बल्कि जीवन भर होने वाली *दैनिक प्रक्रिया* के लिए भी है। इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने अपने पाठकों से आग्रह किया ''उस पवित्रता के खोजी हो जिसके बिना कोई प्रभु को कदापि न देखेगा'' (इब्रानियों 12:14)। मसीही बनने के समय पौलुस के पाठकों को परमेश्वर द्वारा ''अलग किया गया'' था। अब उन्हें अलग किए गए लोगों के रूप में *रहना* आवश्यक था।

यह वह दूसरा अर्थ है जिसे हम अपनी रूपरेखा में ''पवित्र किया जाना'' या ''santification'' शब्द का इस्तेमाल कर रहे थे। रिचर्ड रोजर्स ने कहा है कि धर्मी ठहराया जाना *सही बनाया जाना* के बारे में है, जबकि पवित्र किया जाना *सही जीवन जीने* के बारे में है।[3] आर. सी. बेल ने इसे और प्रकार से कहा, उसने कहा कि धर्मी ठहराया जाना ''हमारे लिए *एक ईश्वरीय कार्य*'' है जबकि पवित्र किया जाना ''हम *में* एक ईश्वरीय कार्य''[4] है।

रोमियों 6 और 7 पवित्र किया जाना के *नियम* को स्थापित करते हैं। यह अध्याय पवित्र किया जाना के ''क्यों'' पर केन्द्रित है यानी यह कि मसीही लोगों को पवित्र जीवन क्यों जीने चाहिए। पत्र में आगे, 12 से 16 अध्यायों में, पौलुस ने पवित्र किया जाना *व्यवहार* पर केन्द्रित किया, जिसमें उसने पवित्र किए गए व्यक्ति के जीवन के *ढंग* का व्यावहारिक उदाहरण दिया। पत्र का अन्तिम भाग इस प्रकार आरम्भ होता है, ''इसलिए हे भाइयो, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर बिनती करता हूं, कि अपने शरीरों को जीवित, और *पवित्र* [''sanctified''] और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ। ...'' (12:1)।

इस पाठ पर नोट्स

इस पाठ में 6:1–4 को लिया जाएगा और यह पवित्र किया जाना के विषय के परिचय का काम करेगा। अध्याय के पहले भाग में मृत्यु पर पौलुस के ज़ोर दिए जाने पर मैं इस प्रस्तुति का नाम ''परमेश्वर का शोक समाचार'' रख रहा हूं।[5] यह ध्यान देते हुए कि प्रेरित ने ''मर गए,'' ''मरे हुओं'' और ''मृत्यु'' शब्दों का इस्तेमाल कितनी बार किया, अध्याय 6 की पहली ग्यारह आयतें पढ़ें।

समाचार पत्रों में आम तौर पर शोक समाचार का कॉलम होता है, जिसमें स्थानीय समाज में होने वाली ताज़ा मौतों की घोषणा होती है।[6] समाचार पत्र के पहले पन्नों में मेरी पत्नी इसी को

पढ़ती है। जब हम क्लेबर्न, टैक्सस में रहते थे तो एक सुबह वह यह पढ़कर चौंक गई थी कि डेविड रोपर मर गया है और उसका जनाजा स्थायी चर्च ऑफ़ क्राइस्ट के प्रार्थना भवन में होगा। बेशक यह कोई दूसरा डेविड रोपर था, परन्तु यह देखकर यकीन नहीं आ रहा था कि मेरा नाम शोक समाचार में है।

परन्तु पौलुस को यह जानकर प्रसन्नता थी कि उसका नाम ''परमेश्वर के शोक समाचार'' में है। उसकी इच्छा थी कि उस ''शोक समाचार'' में *आपका* भी नाम हो और मेरा भी, क्योंकि उसका ज़ोर *पाप के लिए मरे* होने पर था। पाठ में आगे चलकर आपको समझ आएगा कि मेरे कहने का क्या अर्थ है।

एक प्रश्न और एक उत्तर (6:1, 2)

रोमियों के नाम लिखते हुए पौलुस ने आम तौर पर यहूदियों द्वारा उठाई जाने वाली आपत्तियों का अनुमान लगाया। इस अध्याय में उसने फिर से आपत्तियों का अनुमान लगाया और उसके ''आपत्ति करने वाले'' सम्भवतया यहूदी पृष्ठभूमि वाले थे (देखें 6:15; 7:7), परन्तु उसने अपनी टिप्पणियां बपतिस्मा पाए हुए विश्वासियों को बताईं (आयतें 4-11)।

एक प्रश्न

अध्याय का आरम्भ ''सो हम क्या कहें?'' (आयत 1क) से होता है। यानी ''जो कुछ पहले कहा गया है उसके बारे में हम क्या कहें?'' उसने अभी-अभी यह घोषणा की थी कि ''जहां पाप बहुत हुआ वहां अनुग्रह उससे भी कहीं अधिक हुआ'' (5:20)। अब उसने एक प्रतिक्रिया का अनुमान लगाया: ''क्या हम पाप करते रहें, कि अनुग्रह बहुत हो?'' (6:1ख)। इस प्रश्न में एक बिगड़ा हुआ तर्क है: ''क्योंकि पाप से अनुग्रह बढ़ता है इसलिए और पाप होने का अर्थ है कि अनुग्रह और ज्यादा होगा। क्योंकि अनुग्रह जितना अधिक हो उतना ही अच्छा है, तो फिर और पाप करना भी अच्छा होना चाहिए।''

क्या लोग इस प्रकार तर्क देते हैं? स्पष्टतया हां। गरिगोरी रसपुतिन (लगभग 1872-1916) नामक एक रूसी भिक्षु जो रूस की ज़रिना एलग्ज़ेंड्रिया का विश्वासपात्र था एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक उदाहरण है।[7] रसपुतिन ने अपनी दुष्ट जीवन शैली और लज्जाजनक व्यवहार को इस प्रकार के तर्क से उचित ठहराया:

(1) जो लोग पाप करते हैं, उन्हें अधिक क्षमा की आवश्यकता होती है।
(2) परमेश्वर लोगों को तभी क्षमा करता है जब वे मन फिराते हैं।
(3) इसलिए जो जितना अधिक पाप करेगा उतना ही मन फिराएगा, और उसे दूसरे पापियों से परमेश्वर का क्षमा करने वाला अनुग्रह अधिक मिलता है।

परन्तु इतिहास से उदाहरण देखने की आवश्यकता नहीं है। ग्लैन पेस ने एक मित्र की बात बताई जिसने उसे बड़ी उत्सुकता से कहा, ''मुझे अभी-अभी अनुग्रह मिल गया है!'' बाद में उसने अपनी पत्नी को छोड़ दिया। उसने ग्लैन को बताया, ''हां, मुझे मालूम है कि बाइबल कहती है कि

यह पाप है, परन्तु अनुग्रह इसे ढांप लेगा।''[8]

स्पष्टतया लोग बाइबल के समयों में ऐसे ही तर्क देते थे। यहूदा ने लिखा कि ''ये भक्तिहीन हैं, और हमारे परमेश्वर के अनुग्रह को लुचपन में बदल डालते हैं'' (यहूदा 4; देखें गलातियों 5:13)। डियट्रिच बोनहोफर ने परमेश्वर की करुणा के प्रति ओछे व्यवहार का वर्णन करने के लिए ''सस्ता अनुग्रह''[9] वाक्यांश बनाया है। उसने लिखा कि अनुग्रह सस्ता होने के बजाय, महंगा है: यह ''महंगा है क्योंकि यह हमें पीछे चलने को कहता है,'' परन्तु यह अनुग्रह ही रहता है ''क्योंकि यह हमें *यीशु मसीह* के पीछे चलने को कहता है।''[10]

क्या पौलुस का ''आपत्ति करने वाला'' दुष्ट जीवन शैली को उचित ठहराने की कोशिश कर रहा था? शायद। परन्तु यह सम्भावना अधिक है कि ऐसे तर्क का इस्तेमाल प्रेरित को बदनाम करने की कोशिश में किया गया। अध्याय 3 में हमने पौलुस की ओर से यह भाव देखा था: ''और हम क्यों बुराई न करें, कि भलाई निकले? ...'' (आयत 8)। कुछ लोग इस बात से संतुष्ट हैं कि अनुग्रह पर पौलुस की शिक्षा से लोगों को पाप करने के लिए प्रोत्साहन मिला। ऐसे तर्क से उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि पौलुस गलत शिक्षा देने वाला ही होगा।

एक उत्तर

पौलुस ने इस प्रश्न का कि ''क्या हम पाप करते रहें, कि अनुग्रह बहुत हो?'' (6:1ख) उत्तर कैसे दिया? ऐसे प्रश्न की उलझनों ने उसे चौंका दिया। ''कदापि नहीं!'' (आयत 2क)। फिलिप्स के संस्करण में ''कितना भयंकर विचार है!'' है।

रोमियों 6 में पौलुस ने पाप से बचने के लिए मसीही लोगों के लिए कई तर्क दिए। पहला तर्क यह है कि मसीही व्यक्ति ''पाप के लिए मर'' गया। पौलुस ने पूछा, ''हम जब पाप के लिए मर गए तो फिर आगे को उसमें कैसे जीवन बिताएं?'' (आयत 2ख)।

''दो आदमों'' वाले पाठ में हमने ''मृत्यु'' (*thanatos*) शब्द के अर्थ पर चर्चा की थी। पौलुस ने मनपरिवर्तन के लिए शारीरिक मृत्यु की तुलना करते हुए ''मृत्यु'' शब्द का सांकेतिक अर्थ किया। मरे हुए जानवर का विचार करें। आप उस जानवर के नाक के सामने उसका पसंदीदा भोजन रख सकते हैं, परन्तु वह उसे खाएगा नहीं। आखिर वह *मरा हुआ* है। वैसे ही पौलुस कह रहा था कि एक अर्थ में *तुम* मरे हुए हो और तुम्हें पाप की बात नहीं माननी चाहिए जब वह तुम्हें परमेश्वर से दूर करने के लिए बहकाने की कोशिश करे।

हर आकृति की तरह इस आकृति पर भी बहुत अधिक दबाव नहीं दिया जाना चाहिए। मरा हुआ जानवर प्रतिक्रिया देने के *अयोग्य* है, परन्तु पौलुस यह नहीं कहना चाहता था कि मसीही व्यक्ति प्रलोभन को स्वीकार करने के अयोग्य है। इसके विपरीत उसने अपने मसीही पाठकों को बताया कि *क्योंकि* वे पाप के लिए मर गए हैं इसलिए उन्हें अपनी नाशवान देहों पर पाप को राज *नहीं* करने देना *चाहिए*। जिससे वे इसकी लालसाओं की बात मानें। उन्हें अपने शरीरों के अंग अधार्मिकता के हथियार के रूप में पेश *नहीं* करने *चाहिए* (आयतें 11-13)। इस स्थिति को कई बार ऐसे कहा जाता है: ''हम तो पाप के लिए मर जाते हैं, परन्तु पाप हमारे लिए नहीं मरता।''

पौलुस यह नहीं कह रहा था कि मसीही लोग पाप *नहीं* कर *सकते,* बल्कि उसने कहा कि पाप *नहीं* करना *चाहिए*। पापपूर्ण जीवन शैली पाप के लिए मरे होने की नई स्थिति से *मेल* नहीं

खाती। जिम हिल्टन ने लिखा है कि ''बहुत से मसीही [पाप के लिए] मर जाते हैं, परन्तु उन्हें इसका पता नहीं है और इसी लिए ... वे इसे दिखाते नहीं है।''[11]

इस संदर्भ में पौलुस ने मृत्यु की आकृति का इस्तेमाल क्यों किया है? उसका मुख्य उद्देश्य मन परिवर्तन को यीशु के क्रूस से जोड़ना था। जैसे मसीह पापियों *के लिए* मरा (5:6-8), वैसे ही हमें *पाप* से मरना चाहिए। अनुग्रह से उद्धार पाए हुए की स्थिति में पौलुस ने नाटकीय परिवर्तन को रेखांकित करने के लिए इस आकृति का इस्तेमाल किया हो सकता है। शारीरिक मृत्यु से प्रभावित नाटकीय और सम्पूर्ण परिवर्तन से अधिक पर विचार करना कठिन होगा।

एक कार्य और एक परिणाम (6:3, 4)

यह महत्वपूर्ण प्रश्न कि हम *कैसे* और *कब* ''पाप से मरते'' तक ले आता है? कई कारकों का उल्लेख किया जा सकता है। यह अहसास करते हुए कि हमारे पापों ने यीशु को क्रूस पर टांग दिया पाप के प्रति अपने बदले हुए व्यवहार की बात कर सकते हैं (देखें 1 कुरिन्थियों 15:3)। हम यह चर्चा कर सकते हैं कि विश्वास और मन फिराव किस प्रकार भक्तिपूर्ण जीवन जीने की इच्छा पैदा करता है (देखें प्रेरितों 26:20)। निश्चय ही हम यह कह सकते हैं और कहना चाहिए कि परमेश्वर का आत्मा हमें ''शरीर के कामों को मारने'' में सहायता करता है (रोमियों 8:13)।

एक कार्य

परन्तु पौलुस के मन में एक विशेष बात थी। उसने इसमें कोई संदेह नहीं रहने दिया कि उसके कहने का अर्थ क्या है जब उसने कहा, ''हम पाप के लिए मर गए।'' क्रूस के लिए हमारी आरम्भिक प्रतिक्रिया अर्थात बपतिस्मे के चर्म की ओर तुरन्त मुड़ गया।

> क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उस की मृत्यु का बपतिस्मा लिया? सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें (6:3, 4)।

जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट ने लिखा है कि ''*जिस ढंग* से हम पाप के लिए मरे हैं वह यह है कि हमारे बपतिस्मे ने हमें मसीह की मृत्यु में उसके साथ मिलाया है।''[12]

यह पहली बात है कि यहां पत्र में ''बपतिस्मा'' शब्द आया है, सो एक संक्षिप्त शब्द अध्ययन करना उचित होगा। ''बपतिस्मा'' यूनानी भाषा के शब्द *baptisma* या *baptismos* से जबकि ''बपतिस्मा देना'' *baptizo* से लिया गया है। इनमें से प्रत्येक का मूल *bapto* है जिसका अर्थ ''डुबोना'' है। *Baptizo* का अर्थ ''डुबोना या डुबकी देना'' है। *Baptisma* का अर्थ ''डुबकी'' है और *baptismos* डुबकी के कार्य को कहा गया है।[13] ''इतिहासकार इस बात से सहमत हैं कि आरम्भिक कलीसिया में बपतिस्मे का ढंग डुबकी था।''[14] इस कारण CJB में 6:3, 4 का अनुवाद इस प्रकार है: ''क्या तुम्हें नहीं मालूम कि हम में से जिन्होंने मसीहा [यीशु] में *डुबकी* ली है उन्होंने उसकी मृत्यु में *डुबकी* ली है? उसकी मृत्यु में *डुबकी* लेने से हम उसके साथ दफ़नाए गए हैं। ...''

बपतिस्मे के महत्व पर यह एक जबर्दस्त वचन है, जिस कारण कुछ ही लेखक इन आयतों

का अर्थ ''आत्मिक'' बपतिस्मा या शायद ''आत्मा में'' बपतिस्मा लगाने की कोशिश करते हैं। तौभी प्रसिद्ध विद्वान इस बात को मानते हैं कि पौलुस के मन में *पानी* का बपतिस्मा अर्थात ग्रेट कमीशन वाला बपतिस्मा ही था। उदाहरण के लिए डग्लस जे. मू ने लिखा है कि ''पानी के मसीही बपतिस्मे की बात करने के लिए पौलुस आम तौर पर क्रिया *baptizo* का इस्तेमाल करता है। ... इसके अलावा आयत 4 में संज्ञा 'बपतिस्मा' (यू.: *baptisma*) का भी लगभग यही अर्थ है।''[15] स्टॉट ने जोड़ा कि ''उस तत्व के उल्लेख के बिना जिसमें बपतिस्मा होता है, जब भी 'बपतिस्मा' और 'बपतिस्मा दिया जाना' आए यह पानी के बपतिस्मे की बात ही होगी।''[16] इस कारण इस वचन में हम ''बपतिस्मा दिया'' का अनुवाद केवल ''डुबकी दी'' के रूप में ही नहीं बल्कि बड़ी स्पष्टता से ''[पानी में]'' ही जोड़ सकते हैं।

कुछ लेखक चकित हुए हैं कि पौलुस ने यहां पर पानी के बपतिस्मे की बात बताई। एक ने कहा, ''हमें उसके यह कहने की उम्मीद होगी कि 'जिन्होंने मसीह यीशु में *विश्वास किया* है वे उसकी मृत्यु में एक हो गए हैं' ... और यह कि 'उसमें अपने *विश्वास* के द्वारा उसके साथ गाड़े गए थे।' ''[17] परन्तु जो लोग 1 से 5 अध्यायों में ''विश्वास'' की व्याख्या ''केवल विश्वास'' के रूप में करते हैं, बपतिस्मे का परिचय उन्हीं के लिए आश्चर्य है। उनके लिए जो यह समझते हैं कि उद्धार दिलाने वाले विश्वास में आज्ञापालन शामिल है (रोमियों 1:5; 16:26), यह आश्चर्य की बात नहीं है कि पौलुस बपतिस्मे की बात विश्वास की अभिव्यक्ति के रूप में करता। ग्रेट कमीशन देते हुए यीशु ने विश्वास, बपतिस्मे और उद्धार को एक दूसरे से जोड़ा था: ''जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा'' (मरकुस 16:16क)।

बपतिस्मे की जड़ों के आस-पास होने वाला अधिकतर विवाद उन अतियों के कारण है जहां तक लोग परमेश्वर द्वारा दिए गए इस संस्कार के विषय में चले गए हैं। कैथोलिक लोग बपतिस्मे को ''सैकरामेंट'' बनाकर एक अति तक चले गए हैं, जिसे इसे लेने वाले को, विश्वास से अलग और हटकर अनुग्रह पाने के लिए एक धार्मिक संस्कार कहा जाता है। उनका मानना है कि वे बच्चों को ''बपतिस्मा'' दे सकते हैं और उन बच्चों के प्राणों को ''लिम्बो'' से ''बचा'' सकते हैं। बपतिस्मे को केवल एक प्रतीक से थोड़ा अधिक मानते हुए प्रोटेस्टेंट लोग एक दूसरी अति तक चले गए हैं। जब मैं लड़का था, डिनोमिनेशनों के प्रचारक आम तौर पर बपतिस्मे को भीतरी शुद्धता के बाहरी चिह्न के रूप में बताते थे। इन दो अतियों के बीच में बपतिस्मे पर बाइबल की स्थिति है कि यह *विश्वास* की अभिव्यक्ति (जो बिना विश्वास के बेकार है) और परमेश्वर द्वारा दिए गए उद्धार की *शर्त* है। बाइबल के बपतिस्मे में शामिल बातों को 6:3, 4 से बेहतर कोई वचन नहीं बताता।

एक परिणाम

पद्य का आरम्भ होता है, ''क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु में बपतिस्मा लिया, ...'' (आयत 3क)। पौलुस कभी रोम नहीं गया था (1:13), परन्तु उसने यह मानते हुए लिखा कि रोम के मसीही लोगों को बपतिस्मा दिया जा चुका था। यह इस बात का संकेत है कि यीशु में विश्वास करने वालों के लिए यह बपतिस्मा सामान्य प्रत्युत्तर था। एफ़ एफ़ ब्रूस ने लिखा है, ''पौलुस के लेखों में बपतिस्मे के इस तथा अन्य हवालों से, यह स्पष्ट है कि वह बपतिस्मे को

मसीही जीवन में एक 'वैकल्पिक अतिरिक्त' के रूप में नहीं मानता था।''[18] नये नियम के समयों में, ''बपतिस्मा न पाया हुआ मसीही'' जैसी कोई बात नहीं होती थी।

ध्यान दें कि पौलुस ने बपतिस्मा पाए हुओं में अपने आप को भी शामिल किया, जिसमें उसने कहा, ''*हम* सब जिन्होंने मसीह का बपतिस्मा लिया।'' तीस या कुछ वर्ष पहले परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए एक प्रचारक ने उससे कहा था, ''अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल'' (प्रेरितों 22:16)। उस समय, उसने ''उठकर बपतिस्मा लिया'' (प्रेरितों 9:18)।

अपनी और अन्यों की, जिन्होंने बपतिस्मा लिया था बात करते हुए उसने कहा, ''... हम सब ने ... *मसीह यीशु में* बपतिस्मा लिया'' (रोमियों 6:3)।[19] ''मसीह में'' होने का अर्थ यीशु के साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध होना है (यूहन्ना 15:5)। गलातियों के मसीही लोगों को पौलुस ने बताया, ''जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है'' (गलातियों 3:27)। यीशु के साथ इस व्यक्तिगत, उद्धार दिलाने वाले सम्बन्ध पर रोमियों 6 के पूरे अध्याय में ज़ोर दिया गया है:

आयत 3– ''... मसीह यीशु *का* बपतिस्मा लिया, तो उस की मृत्यु का बपतिस्मा लिया?''
आयत 4– ''... बपतिस्मा पाने से हम उसके *साथ* गाड़े गए।''
आयत 5– ''... उसके जी उठने की समानता में भी जुट जाएंगे।''
आयत 6– ''... उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया।''
आयत 8– ''... हम मसीह के *साथ* मर गए, ... उसके साथ *जीएंगे* भी।''

विलियम बार्कले ने लिखा है, ''जब तक हम वायु में नहीं हैं और वायु हम में नहीं है, तब तक हम भौतिक जीवन जी नहीं सकते; [इसी प्रकार] जब तक हम मसीह में और मसीह हम में नहीं हैं [देखें कुलुस्सियों 1:27], तब तक हम परमेश्वर का जीवन नहीं जी सकते।''[20]

आयत 3 में यहां पर पौलुस ने अपने पाठकों को वह बताया था जो उन्हें पहले से मालूम था। वाक्य पूरा करते हुए उसने उन्हें वह बताया जिस पर उन्होंने विचार नहीं किया होगा कि वे सब जिन्होंने मसीह यीशु में बपतिस्मा लिया है ''उन्होंने उसकी मृत्यु में बपतिस्मा लिया है'' (आयत 3ग)। इस प्रकार पौलुस ने अपनी इस चर्चा का आरम्भ किया है कि ये मसीही लोग कैसे और कब ''पाप से मरे'' थे। जब उन्होंने बपतिस्मा लिया था, तो उन्होंने यीशु की मृत्यु और उसके परिणामों में भाग लिया था।

1 कुरिन्थियों 15 में पौलुस ने लिखा कि सुसमाचार का सार मसीह की मृत्यु, गाड़ा जाना और जी उठना है:

> हे भाइयो, मैं तुम्हें वही सुसमाचार बताता हूं ...
> इसी कारण मैं ने सब से पहिले तम्हें वही बात पहुंचा दी, जो मुझे पहुंची थी, कि पवित्र शास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिए मर गया। और गाड़ा गया; और पवित्र शास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा (1 कुरिन्थियों 15:1–4)

सुसमाचार संदेश के तत्व निम्न रेखाचित्र में दिखाए गए हैं

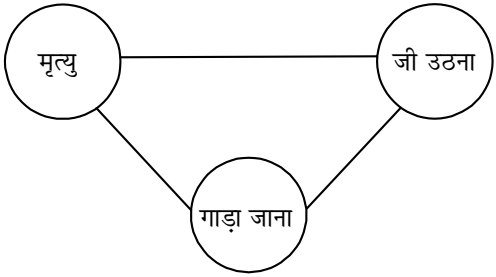

रोमियों 6 में पौलुस ने दिखाया कि एक अर्थ में किस प्रकार हमारा बपतिस्मा उन यादगारी घटनाओं का पुन: निर्माण है। पहले तो हम जैसा कि यहां सुझाव दिया गया है, यीशु की मृत्यु में भागी होते हैं:

हम पाप *में* मरे हुए थे (इफिसियों 2:1), परन्तु बपतिस्मे में हम *पाप* से मरते हैं। आयत 6 में पौलुस ने कहा कि ''हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया।''

मरने के बाद यीशु को दफ़ना दिया गया था। पौलुस ने इसी से समानता बनाई: ''अत: उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए'' (आयत 4क)। अधिकतर लेखक इस बात को मानते हैं कि गाड़े जाने की आकृति पानी में हमारे साथ डुबकी लेने से मेल खाती है। जेम्स मैक्नाइट ने लिखा है कि ''बपतिस्मे में ... बपतिस्मा पाने वाले व्यक्ति को पानी के भीतर गाड़ दिया जाता है।''[21] वे भी, जो छिड़काव देते हैं इस बात से सहमत हैं कि ''छिड़काव अपने आप में''[22] गाड़े जाने का प्रतीक नहीं है।

बपतिस्मे के पानी में गाड़े जाने पर पाप के लिए मरे होने की प्रक्रिया पूरी होती है।

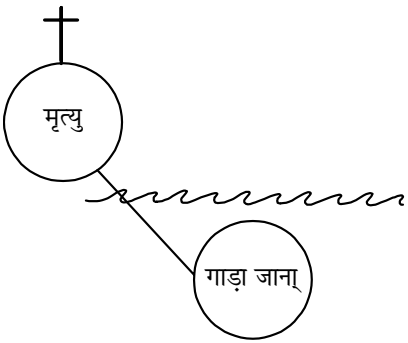

पौलुस ने ज़ोर दिया कि पानी में यह गाड़ा जाना ''मृत्यु में'' (आयत 4ख) है, जो पुन: उसमें जो हम करते हैं और जो मसीह ने किया निकट सम्बन्ध को दिखाता है। ''जो कुछ उसके साथ हुआ

वही हमारे साथ होना माना जाता है।''[23]

तीसरे दिन मसीह मुर्दों में से जी उठा। इस कारण पौलुस ने आगे कहा, ''जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नये जीवन की सी चाल चलें'' (आयत 4ग, घ)। जैसे मसीह मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही बपतिस्मे की ''पानी की कब्र'' से हम जी उठे। कुलुस्से के लोगों को पौलुस ने बताया था कि ''उसी के साथ बपतिस्मे में गाड़े गए और उसी में परमेश्वर की सामर्थ पर विश्वास करके, जिसने उसने मरे हुओं को जिलाया, उसके साथ जी भी उठे'' (कुलुस्सियों 2:12)।

इस पुन: सम्पादन की पूर्णता इस प्रकार दिखाई गई है:

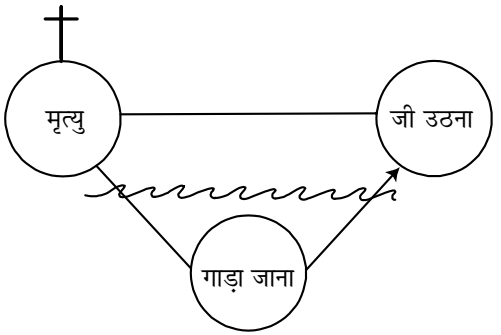

एंडर्स नाइग्रेन ने बपतिस्मे पर पौलुस की रोमियों 6 की शिक्षा पर यह टिप्पणी की:

> बपतिस्मा लेने वाले को जब पानी में डुबकी दी जाती है, तो यह कार्य ''मसीह के साथ'' गाड़े जाने को दर्शाता है; और जब वह पुन: पानी से बाहर आता है, वह ''मसीह के साथ'' जी उठने को दर्शाता है। परन्तु यदि उस कारण कोई बपतिस्मे के पौलुस के विचार को उस ''प्रतीक'' के रूप में माने, जिसमें आमतौर पर इस शब्द का इस्तेमाल होता है, तो यह बहुत ही गलत होगा। क्योंकि पौलुस के अनुसार बपतिस्मे में न केवल प्रतीकों के साथ बल्कि वास्तविकताओं के साथ भी काम करते हैं। बपतिस्मा जिस बात का प्रतीक है, वह वास्तव में *करता* भी है और संक्षिप्त रूप में बपतिस्मे के द्वारा। ... [ह] म पहले मसीह की देह के अंग नहीं थे; परन्तु अब बपतिस्मे के द्वारा बन गए हैं और अब सिर से अलग नहीं हो सकते।[24]

जैसा मैंने पहले कहा, 6:3, 4 बपतिस्मे पर एक ज़बर्दस्त वचन है और हमारे उद्धार के लिए परमेश्वर के प्रबन्ध में इसका स्थान है। अधिकतर टीकाकार इस वचन की सामर्थ से इनकार नहीं कर सकते। वे यह कहने में हिचकिचाते हैं कि बपतिस्मा विश्वास को दिखाने का *अनिवार्य* भाग है, परन्तु बहुत से लोग इसे सच मानने को लगभग तैयार नहीं है:

- ''नया नियम पानी को एक बड़े अनुभव के तत्व के रूप में दिखाता है, जिसे [जेम्स] डन 'मनपरिवर्तन का आरम्भ' कहता है।'' डग्लस जे. मू।[25]
- ''मसीह में विश्वास और बपतिस्मा वास्तव में दो इतने अलग-अलग अनुभव नहीं थे

जितने एक ही के दो भाग'' (एफ. एफ. ब्रूस)।[26]

- ''[नये नियम] के समयों में मनपरिवर्तन से पूर्व बपतिस्मा इतना पहले आता था कि दोनों को एक ही घटना माना जाता था ...'' (वाल्टर डब्ल्यू. वैस्सल)।[27]

परन्तु हमारे वचनपाठ में पौलुस का उद्देश्य बपतिस्मे की अनिवार्यता को साबित करना नहीं था; उसके पत्र के मूल पाठकों में से किसी ने बपतिस्मे की अनिवार्यता पर सवाल नहीं किया। पौलुस के कहने का अभिप्राय था कि हमें यह जानते हुए कि हमारे पाप धोए जा चुके हैं, भक्तिपूर्ण जीवन जीने की प्रेरणा मिलनी चाहिए। उसने कहा कि हम बपतिस्मे के पानी से ''जीवन के *नयेपन* में चलने[28]'' के लिए जी उठते हैं (आयत 4घ)।

हमारा बपतिस्मा ''मसीह में'' होता है (आयत 3ख)। ''मसीह में'' हम ''नई सृष्टि[यां] हैं''; ''पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, वे सब नई हो गईं'' (2 कुरिन्थियों 5:17)। परमेश्वर के साथ हमारा एक नया सम्बन्ध बन गया है; हमें नई आशीषें मिली हैं; हमें नई शक्ति मिली है। ''सब कुछ नया हो गया है'' (2 कुरिन्थियों 5:17; KJV)! आश्चर्य की बात नहीं कि बपतिस्मा लेने के बाद खोजा ''आनन्द करता हुआ अपने मार्ग पर चला गया'' (प्रेरितों 8:39)।

हमें ''जीवन का नया पन'' मिला है इसलिए हमें उसी के अनुसार *कार्य* करना चाहिए। सम्बन्ध में परिवर्तन आने से हमारे जीवनों में परिवर्तन आना चाहिए। NEB में लिखा है कि हमें ''जीवन के नये मार्ग पर अपने कदम रखने'' चाहिए (आयत 4घ)। कुलुस्से के लोगों को उनके बपतिस्मे के विषय में पौलुस ने लिखा:

> सो जब तुम मसीह के साथ जिलाए गए, तो स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में रहो, जहां मसीह वर्तमान है और परमेश्वर के दहिनी ओर बैठा है। पृथ्वी पर की नहीं परन्तु स्वर्गीय वस्तुओं पर ध्यान लगाओ। क्योंकि तुम तो मर गए, और तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है (कुलुस्सियों 3:1-3)।

ग्लैन पेस ने किसी स्त्री को बपतिस्मा देने की बात बताई। जब उन्होंने उस स्त्री को पानी से बाहर निकाला, तो वह आकाश की ओर हाथ उठाकर कहने लगी, ''हे परमेश्वर, मुझे जीवन के अपने शेष दिनों में इसके प्रति विश्वास योग्य बने रहने में सहायता करना!''[29] यह वह प्रार्थना है ,जो हम सब को करनी चाहिए।

सारांश

अगले पाठ में हम उस चर्चा पर वापस आएंगे कि बपतिस्मा लेने पर क्या होता है और इससे हमारे जीवनों पर क्या प्रभाव पड़ना चाहिए। अभी के लिए आयत 6 के आगे थोड़ा सा देखते हैं: ''हम जानते हैं कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया। ...'' उस आयत की भावना गलातियों 2:20 में पौलुस के शब्दों में मिलती है: ''मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं, और अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है; ...।''

जो व्यक्ति अभक्तिपूर्ण, अनैतिक जीवन जी रहा था वह यीशु में विश्वास करने लगा। जिसका परिणाम यह हुआ कि उसका जीवन बदल गया। एक दिन बाज़ार में जाते हुए, उसे एक

स्त्री मिली जिससे पहले कभी उसने व्यभिचार किया था। स्त्री उसे देखकर शरारत भरी आंखों से मुस्कुराने लगी। जब उसने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी, तो वह कहने लगी, ''तू ने मुझे पहचाना नहीं? *मैं* हूं।'' आगे बढ़ते हुए, उन्होंने कहा, ''हां, परन्तु *मैं* अब वह नहीं हूं।''[30]

आइए ''परमेश्वर के शोक समाचार'' पर अपने पाप को एक प्रश्न के साथ समाप्त करते हैं: ''क्या *आपका* नाम 'परमेश्वर के शोक समाचार' में है?'' क्या आप एक पश्चात्तापी विश्वासी के रूप में बपतिस्मा लेकर अपने पाप से मर चुके हैं? यदि आपने वचन के अनुसार बपतिस्मा लिया है, तो क्या आपका *जीवन* वैसा है जैसा जीवन के नयेपन के लिए परमेश्वर ने आपको दिया है? यदि आपका नाम ''परमेश्वर के शोक समाचार'' में नहीं है तो मेरी विनती है कि आप प्रभु के पास आ जाएं या आज ही उसके पास लौट आएं।

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

इस और अगले दो पाठों को इस पाठ का शीर्षक और विषयवस्तु या अगले पाठ का शीर्षक और विषयवस्तु इस्तेमाल करते हुए एक ही पाठ में मिलाया जा सकता है। रोमियों 6 पूरा या उसके भाग का पूरा अध्ययन करने के और भी ढंग हैं। ''जिन कारणों से आपको पाप नहीं करना चाहिए'' पर सिखा या प्रचार कर सकते हैं। कोय रोपर ने इस अध्याय पर अपने प्रवचन का नाम ''बड़ा परिवर्तन'' दिया है।[31] कई लेखक ''जानना'' शब्द पर ज़ोर देते हैं: ''चार बातें जो आपको जाननी चाहिए'' (देखें 6:3, 6, 9, 16)। एक और ढंग ''तीन बातें जो नहीं हैं और कभी नहीं होनी चाहिए'' पर बोलना हो सकता है (6:1, 2, 15; 7:7)।

कई लेखक यह कहकर कि मसीही लोगों द्वारा लिया जाने वाला बपतिस्मा रहस्य धर्मों और/या यहूदी पारम्परिक धोए जाने से ''लिया गया था,'' बपतिस्मे पर पौलुस की शिक्षा पर संदेह करते हैं। नये नियम के बपतिस्मे और यहूदियों या मूर्तिपूजकों के संस्कारों में कई अन्तर हैं, परन्तु विश्वासी के लिए उनका नाम देने की आवश्यकता नहीं है। इतना जानना काफ़ी है कि पवित्र आत्मा ने पौलुस को रोमियों 6 लिखने के लिए प्रेरणा दी। जिस बपतिस्मे के विषय में हम बाइबल में पढ़ते हैं वह मनुष्य की ओर से नहीं, परमेश्वर की ओर से है।

टिप्पणियां

[1]यह कहानी 1989 के अगभग खड़ा होने वाले प्रचारक मेल्विन डेनियल्स द्वारा मेरे साथ जोड़ी गई। [2]*Hagiasmos* और *hagios* पर जानकारी *दि एनलेटिकल ग्रीक लैक्सिकन* (लंदन: सेमुएल बैगस्टर एण्ड सन्स, 197), 3; डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ. अंगर, एण्ड विलियम व्हाइट, जूनि., *वाइन'स कम्पलीट एक्सपोज़िस्टरी, डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एण्ड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 307, 544-45 पर आधारित है। [3]रिचर्ड रोजर्स, *पेड इन फुल: एक कमैंट्री ऑन रोमन्स* (लब्बॉक, टैक्सस: सनसैट इंस्टीट्यूट प्रैस, 2002), 86. [4]आर. सी. बेल्ल, *स्टडीज़ इन रोमन्स* (ऑस्टिन, टैक्सस: फर्म फाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1957), 49. [5]यह विचार जिम हिल्टन, *जस्ट डाइंग टू लिव* (कलमज़ू, मिशिगन: मास्टर'स प्रैस, 1976), 49 से लिया गया था। [6]अधिकतर समाजों में क्षेत्र में होने वाली मृत्यु की जानकारी देने के लोगों के अपने माध्यम होते हैं। जहां आप रहते हैं, वहां जो भी माध्यम हो, इस पाठ के परिचय के लिए उसे रूपक के रूप में इस्तेमाल करें। [7]डी. स्टुअर्ट ब्रिस्को, *मास्टरिंग दि न्यू टैस्टामेंट: रोमन्स,* दि कम्युनिकेटर'स कमैंट्री सीरीज़ (डलास: वर्ड पब्लिशिंग, 1982), 131; एफ. एफ. ब्रूस, *दि लैटर ऑफ*

पॉल टू द रोमन्स, द टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 127. [8]जुडसोनिया चर्च ऑफ क्राइस्ट, जुडिसोनिया आरकैंसा, तिथि नहीं (लगभग 2001) में ग्लैन पेस द्वारा दिया गया प्रवचन। [9]ब्रिस्को, 130. [10]ब्रूस बार्टन, डेविड वीरमैन एण्ड नील विल्सन, *रोमन्स,* लाइफ एप्लीकेशन बाइबल कमैंट्री (व्हीटन, इलिनोइस: टिंडेल हाउस पब्लिशर्स, 1992), 114 में उद्धृत।

[11]हिल्टन, 49. [12]जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट, *दि मैसेज ऑफ़ रोमन्स: गॉड'स गुड न्यूज़ फ़ॉर द वर्ल्ड,* द बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1994), 168. [13]*दि एनलेटिकल ग्रीक लैक्सिकन,* 65. [14]वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे, *दि बाइबल एक्सपोजिशन कमैंट्री,* अंक 1 (व्हीटन, इलिनोइस: विक्टर बुक्स, 1989), 531. [15]डग्लस जे. मू *रोमन्स,* दि NIV एप्लीकेशन कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 2000), 196. [16]स्टॉट, 173. [17]मू, 196. [18]ब्रूस, 128. [19]''मसीह में'' मिलने वाली आशिषें, जिम्मी एलन, *सर्वे ऑफ रोमन्स,* चौथा संस्क., संशो. (सरसी, आरकैंसा: लेखक द्वारा, 1973), 64 में दी गईं। [20]विलियम बार्कले, *दि लैटर टू द रोमन्स,* संशो. संस्क., दि डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1975), 86.

[21]जिम्स मेक्नाइट, *ए न्यू लिटरल ट्रांसलेशन फ्रॉम दि ओरिजनल ग्रीक ऑफ ऑल दि एपोस्टालिकल एपिस्टल्ज़ विद ए कमैंट्री एण्ड नोट्स* (पृष्ठ नहीं: तिथि नहीं; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1984), 84. [22]बार्कले, 84. [23]मैक्नाइट, 85. [24]एंडर्स नाइग्रेन, *कमैंट्री ऑन रोमन्स* (फिलाडेल्फिया: फोर्टरेस प्रैस, 1949), 233–34. [25]मू, 204; जेम्स डी. जी. डन, *बेपटिज़्म इन द होली स्पिरिट* (लंदन: एससीएम, 1970), 145. [26]ब्रूस, 129. [27]वाल्टर डब्ल्यू.वेस्सल, नोट ऑन रोमन्स *दि NIV स्टडी बाइबल,* सम्पा. कैनथ बार्कर (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1985), 1713. [28]''चलना, दृढ़, दिखावट रहित विकास के लिए रूपक है जो मसीही जीवन को दिखाने के लिए होना चाहिए'' (मौरिस, 249)। [29]जुडसोनिया चर्च ऑफ क्राइस्ट, जुडसोनिया, आरकैंसा, तिथि नहीं (लगभग 2000) में ग्लैन पेस, द्वारा दिए गए प्रवचन से लिया गया। [30]एक प्रसिद्ध लातीनी चर्च फादर अगस्टिन (354–430 ईस्वी) के बारे में कई स्रोतों में यह कहानी बार बार बताई गई है।

[31]कॉय रोपर, ''दि ग्रेट ट्रांस्फरमेशन,'' *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* (अगस्त 1988): 3.